रम्। भूम्ने परिष्कन्दम्। प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम् ॥ ७ ॥

भायै दार्वाहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य पृष्ठायाभिषेक्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकाय पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारम्। अवर्त्यै वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गाय लोकाय भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥ ८ ॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जवायाश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्। तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्। कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम् ॥ ९ ॥

मन्यवे यस्तापम्। क्रोधाय निसरम्। शोकायाभिसरम्। उत्कूलविकूलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायां जनीकारम्। निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायास्वम् ॥ १० ॥

यम्यै यमस्वम्। अथर्वभ्योऽवतोकाम्। संवत्सराय